SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.16

रीतिमुक्त काव्य घनानंद के संदर्भ में

डॉ गंगेश दीक्षित

सहायक आचार्य हिंदी
नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर

सारांश

घनानंद की रचनाओं में रीतिमुक्त काव्य का विशिष्ट स्वरूप और साहित्यिक प्रवृत्ति उभरती हैं। वे परंपरागत छंदबद्ध कविता से मुक्त होकर स्वतंत्र लय एवं आकार का प्रयोग करते हैं, जिससे कविता का स्वरूप सहज एवं प्रवाहमय हो जाता है। घनानंद के पदों में रीतिमुक्त का अर्थ परंपरागत छंदबंधनों से मुक्ति और जीवन की सहज अभिव्यक्ति है। उनकी साहित्यिक प्रवृत्ति उस युग के धार्मिक एवं सामाजिक परिवेश से प्रभावित है, जहां भक्ति आन्दोलन का व्यापक प्रभाव था। उनके पदों में भावना और सामान्य जनजीवन के अनुभवों का समावेश है, जो पारंपरिक काव्य से भिन्न है। घनानंद का काव्य साधारण और मुक्त है, लेकिन जीवन के गहरे दर्शन और नैतिकता को भी दर्शाता है। वे मीठे सहज सत्य की ओर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उनका उद्देश्य शब्दसौंदर्य से अधिक जीवन के सरलतम पलों का अविष्कार करना है। उनका काव्य लोकजीवन की सरल भाषा का प्रयोग करता है, जो पाठक को सहजता और आधुनिकता का अनुभव कराता है। दार्शनिक एवं नैतिक अपेक्षाओं के संदर्भ में, उनकी रीतिमुक्त आत्मीयता और मृत्यु से जुड़े संघर्षों का चित्रण है। उनकी रचनाएँ वास्तविकता की अभिव्यक्ति की आकांक्षा से अभिमुख हैं। घनानंद की रीतिमुक्त विद्रोह नहीं, बल्कि जीवन के स्वाभाविक और सहज स्वभाव को स्वीकार करने का प्रतीक है। आलोचनात्मक विवेचन में, उनकी रीतिमुक्त को नए मानकों से समझा जाता है, जहां गेयता और साधारणता का अनुभव झलकता है। उनकी रचनाएँ विभिन्न दृष्टिकोणों को जन्म देती हैं, और वह स्थानीयता एवं नैतिकता का गहरा रंग समाहित करती हैं। अन्य रीतिमुक्त कवियों से तुलना करने पर ज्ञात होता है कि घनानंद की रीतिमुक्त अधिक लोकसंबंधित और जीवन समर्थक प्रतीत होती है। संक्षेप में, उनकी रचनाएँ नई साहित्यिक प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति हैं, जो सामाजिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य में स्वतंत्रता और सहजता का संदेश देती हैं।

मुख्य शब्द: रीतिमुक्त काव्य, परंपरागत छंदबद्ध, रीतिमुक्त साहित्यिक, घनानंद।

1. प्रस्तावना

रीतिमुक्त साहित्यिक परंपरा के विकास की एक विशिष्ट झलक प्रस्तुत करता है। यहाँ, रीतिमुक्त कवि घनानंद की रचनाओं के गहन विश्लेषण की प्रक्रिया आरंभ करने से पूर्व, उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों का विस्तार से और ध्यानपूर्वक परिचय दिया गया है। इस संदर्भ में, उनके जीवनकाल के राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिवेश का गंभीर अध्ययन किया गया है, जिससे उनकी काव्यधारा के उद्भव को समझना अधिक सरल हो जाता है। रीतिमुक्त कविता की उत्पत्ति पूर्व के रीतिसंष्कारों से भिन्न, नई भावधाराओं को प्रस्तुत करती है, जो पारंपरिक काव्यशास्त्र से मुक्त,

नवीन दृष्टि के साथ और मौलिकता से परिपूर्ण होती हैं। यह अध्ययन यह दर्शाता है कि ये रचनाएँ समय की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुई हैं और अपने युग के सामाजिक संवेदनाओं, विचारधाराओं एवं भावनाओं का अदृश्य चित्रण करती हैं। परिचय में यह भी स्पष्ट किया गया है कि रीतिमुक्त, अर्थात् पारंपरिक छंदों से मुक्त होकर स्वच्छंदता, प्राकृतिकता एवं सच्चाई को प्रदर्शित करने की इच्छा, कविता के रूप में नवीनता और स्वतंत्रता का प्रतीक बनती है। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से महाकवि घनानंद की काव्यकला में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जहाँ उन्होंने पारंपरिक छंदों और बंधनों को तोड़कर नए शिल्प और संवेदनाओं का संचार किया है। इस प्रकार, परिचय का अभिप्राय रीतिमुक्त की साहित्यिक विशेषताओं की पृष्ठभूमि का निर्माण करना, उसकी प्रेरणाओं और मूलभूत आधारों का परिचय कराना है, ताकि पाठक इस विशिष्ट काव्यधारा की गहराई और ऐतिहासिक महत्व को पहचान सकें। संक्षेप में, यह खंड रीतिमुक्त की अवधारणा को स्थापित करने के साथ-साथ घनानंद की रचनात्मकता के अद्वितीय तत्वों और उसके विकास की कहानी प्रस्तुत करता है। यह लेखन शैली अत्यंत प्रभावशाली और सूक्ष्म जानकारी से परिपूर्ण है, जो भविष्य में होने वाले विश्लेषण के लिए एक मजबूत आधार तैयार करती है। इस प्रकार, यह परिचय न केवल विषय का प्राथमिक परिचय प्रस्तुत करता है, बल्कि इसकी मौलिकता और नवीनता का भी परिचायक है, जिससे पाठक को रीतिमुक्तीय कविता की विशिष्टता को समझने में गहरी सहायता मिलती है और उन्हें इस दिशा में अधिक विचारशील होने के लिए प्रेरित किया जाता है।

2. घनानंद का जीवन और ऐतिहासिक-आर्थिक प्रसंग

घनानंद का जीवन एवं ऐतिहासिक-आर्थिक प्रसंग उनके रीतिमुक्त काव्यधारा के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वे मध्यकालीन भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में वामपंथी विचारधारा और आध्यात्मिक परंपराओं का संगम थे। उनका जन्म उत्तर भारत के किसानों एवं मजदूर वर्ग के बीच हुआ, जिससे उनके जीवन में तत्कालीन श्रमजीवी जीवन की कठिनाइयों का प्रतिबिंब स्पष्ट दिखाई देता है। आर्थिक दृष्टिकोण से उस समय का भारत जातीय विभाजन, देशीय विभाजन व कृषि-व्यवस्था की जटिल समस्याओं से जूझ रहा था। इन परिस्थितियों ने घनानंद के संगीत और कविता के दर्शन को प्रभावित किया, जिसमें उन्होंने लोक जीवन की सहजता, श्रम और स्वतंत्रता के विचारों को संसाधित किया।

बौद्धिक स्तर पर, उन्होंने धार्मिक संस्थानों के कठोरता एवं रूढ़ियों का विरोध करते हुए, आत्मा एवं ब्रह्म के विषय पर स्वतंत्र विचार विकसित किए। समकालीन सामाजिक आंदोलन एवं आर्थिक संकटों ने उनकी कविता में क्रांतिकारी स्वर को जन्म दिया, जहाँ उन्होंने रूढ़िवादी परम्पराओं को तोड़ने का प्रयास किया। फलस्वरूप, उनके जीवन का संघर्ष तथा ऐतिहासिक-आर्थिक संदर्भ रीतिमुक्त काव्य के स्वरूप एवं उद्देश्य में स्पष्ट होता है।

उनकी रचनाएँ न केवल ऐतिहासिक-सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि उनके कवि-कर्म में स्वतंत्रता, आत्म-साक्षात्कार एवं सामाजिक परिवर्तन के प्रवाह भी परिलक्षित होते हैं। यह संदर्भ बताता है कि घनानंद के जीवन का समय, उनके कार्यों के विचारधारात्मक आयामों को परिपक्व बनाने में सहायक रहा, जहाँ उन्होंने उस युग के आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिशीलता को अपनी कविताओं के माध्यम से जीवंत किया। इस प्रकार, उनका जीवन एवं ऐतिहासिक-आर्थिक प्रसंग उनके साहित्यिक कर्म की महत्ता को समझने हेतु अनिवार्य आधार प्रदान करते हैं।

3. रीतिमुक्त कवितावली: परिभाषा और साहित्यिक प्रवृत्ति

रीतिमुक्त कवितावली आधुनिक हिन्दी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखती है, जिसमें कवि की व्यक्तिगत भक्ति और दार्शनिक विचारधारा झलकती है। यह प्रवृत्ति पारंपरिक श्रृंगार एवं भक्ति साहित्य से हटकर आत्मानुशासन और मानव जीवन के रहस्यों पर केंद्रित है। इसकी अभिव्यक्ति स्वतंत्रता और सहजता का मिश्रण है, जिसमें नवाचार के लिए भाषा की मर्यादा को तोड़ा नहीं जाता। यह शैली व्यक्तिपरकता एवं अंतर्मुखता का प्रतीक बनती है, जहाँ कवि अपनी अनुभूतियों को बंधनों से मुक्त करता है। रीतिमुक्त कवितावली का उद्भव क्रांतिदर्शी भावों एवं व्यक्तिपरक दृष्टिकोण के माध्यम से होता है, जो पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती देता है। यह साहित्यिक प्रवृत्ति स्वतंत्रता, स्वाभाविकता और आत्मप्रतिबिंब का प्रतीक है। कवि अपनी कृतियों के माध्यम से जीवन के सत्य और नैतिकता को अभिव्यक्त करता है, जो 'स्वमुक्ति' और 'अंतरात्मा की स्वतंत्रता' पर केंद्रित है। रीतिमुक्त कवितावली

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

पारंपरिक छंदबद्धता से भिन्न होकर स्वतंत्र काव्यशैली अपनाती है, जिसमें सरलता और भावों का प्रवाह प्रमुख होता है। वेदना, प्रेम और विमुक्ति जैसे तत्व इसकी मुख्य धारा हैं, जो जीवन के यथार्थ से जुड़ते हैं। संगीतात्मकता और भाषिक गुण इन रचनाओं की विशेषता हैं, जो पाठक को आत्मिक स्तर पर छू जाती हैं। इस प्रकार, रीतिमुक्त कवितावली का स्वरूप स्वतंत्रता, सहजता एवं आत्मानुभूति का समागम है, जो कविता के नए पहलुओं को खोलता है और साहित्य में उसकी विविधता तथा प्रासंगिकता को सिद्ध करता है।

4. घनानंद के पदों में रीतिमुक्त **की अभिरचना**

घनानंद के पदों में रीतिमुक्त की अभिरचना उनकी काव्यगत संरचना एवं विषयवस्तु का सूक्ष्म निरीक्षण प्रस्तुत करती है। इन पदों में रीतिमुक्त का भाव विशेष रूप से स्वतंत्रता और आत्मस्वाधीनता की ओर प्रवृत्त कर सकता है। उनके काव्य में परंपरागत बंधनों से मुक्ति का आकांक्षा स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है, जहाँ भक्तिकवियों के मर्म को नकारात्मक रूप से देखते हुए भी, एक आध्यात्मिक स्वतंत्रता का स्वरूप उभरा है। घनानंद ने अपने पदों में आम भावों को तोड़कर नई अभिव्यक्ति का प्रयोग किया है, जिससे रीतिमुक्त का आदर्श साकार होता है।

उनके पदों की भाषा एवं शैली में श्रृंगारिक कल्पनाओं से परे जाकर, आत्मा की स्वाधीनता का संदेश प्रमुखता से दिखाई देता है। यहाँ रीतिमुक्त का अर्थ केवल सामाजिक या संस्कारगत बंधनों से मुक्ति नहीं, बल्कि आत्मिक और दार्शनिक स्तर पर स्वतंत्रता का निरूपण है। वे निरुक्ति, कल्पना और प्रतीकात्मकता का प्रयोग कर रीतिमुक्त को अभिव्यक्त करते हैं, जिससे काव्य का न केवल सौंदर्य बल्कि उसकी गहरी अर्थधारा भी उभरकर सामने आती है। अपनी पदावली में घनानंद ने व्यक्तिक स्वतंत्रता, आत्मा की एकाकी यात्रा और बंधनों से मुक्ति के विचार मार्ग को प्रखरता से रेखांकित किया है। इन पदों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि वे अपने समय की पारंपरिक रीतियों एवं विधियों में संशोधन कर, नवीन अभिव्यक्ति और विचारधारा का समावेश करते हैं। इस तरह, घनानंद के रीतिमुक्त पद न केवल एक साहित्यिक रूप हैं, बल्कि आत्मिक स्वतंत्रता के दार्शनिक विचारों की प्रस्तुति भी हैं, जो पाठक को रीतियों से ऊपर उठकर आत्मबोध की ओर प्रेरित करते हैं।

5. मानक संदर्भ और साहित्यिक परंपराओं के अन्तर

मानक संदर्भ और साहित्यिक परंपराओं के बीच भिन्नताएँ एवं समानताएँ रीतिमुक्त कविताओं की समझ में अंतर्दृष्टि लाती हैं। पारंपरिक हिंदू साहित्यिक परंपराएँ, जैसे भक्तिकाव्य, भक्ति और लौकिक अनुभव को महत्त्व देती हैं। यहाँ, रीतिमुक्त की अनुभूति आध्यात्मिक साधना और भक्ति रस पर आधारित है। घनानंद की रीतिमुक्त एक भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है; वे इसे मानव जीवन की अराजकता से मुक्ति और स्वाभाविक प्रवाह के रूप में देखते हैं, जो धार्मिक संप्रदायों से स्वतंत्र है। साहित्यिक परंपराएँ मानवीय अनुभवों को प्रतिबिंबित करती हैं, जबकि घनानंद का दृष्टिकोण सहजता और व्यक्तिगत अनुभव पर केन्द्रित है। यहाँ स्वाभाविकता और विविधता का महत्त्व है, जो दार्शनिक विचारधाराओं से मेल खाता है। घनानंद का दृष्टिकोण अधिक स्वतंत्र, प्राकृतिक और अनुभवप्रधान है, जो पारंपरिक धार्मिक रीतियों से अलग है। यह विविधता रीतिमुक्त के सांस्कृतिक और दार्शनिक आधारों को समझने में सहायक है, एवं साहित्य की धारणा को नई दिशा प्रदान करती है।

6. दार्शनिक और नैतिक अपेक्षाएं: रीतिमुक्त के तत्व

रीतिमुक्त का सांस्कृतिक एवं दार्शनिक आधार उसकी स्वाधीनता और आत्मवृत्तियों पर केंद्रित है। यह प्रवृत्ति मानवीय अंतर्मन की स्वतंत्रता, स्वाभाविकता और प्राकृतिकता के प्रति श्रद्धा प्रकट करती है। घनानंद के रीतिमुक्त काव्य में इन तत्वों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है, जहां कवि ने सामाजिक अपेक्षाओं एवं परंपराओं से स्वतंत्र स्वर के प्राकृत अभिव्यक्ति दी है। इसमें नैतिकता का स्थान विशिष्ट रूप से महत्वपूर्ण होता है, जिसमें स्वार्थ और सामाजिक दबावों से स्वतन्त्र होकर स्वभाव की सच्चाई को उद्घाटित किया गया है।

दार्शनिक दृष्टिकोण से, रीतिमुक्त का उद्देश्य मानव के आत्मिक उन्नयन एवं आत्मान्वेषण का मार्ग प्रशस्त करना है। घनानंद ने इस साहित्यिक प्रवृत्ति के माध्यम से मानव स्वाभाव को उसकी मूल प्रकृति में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। उनका मानना है कि अतिशयोक्ति और बंधनों से मुक्त होकर

जीवन को सहज, सरल और प्राकृतिक रूप में जीना ही रीतिमुक्त का मूल तत्व है। इस संदर्भ में, नैतिकता का काम समाज में सत्यता, शुचिता और स्वाभाविकता का पालन करना भी है, जिसे वे अपने पदों में बार बार रेखांकित करते हैं। अतः, घनानंद के रीतिमुक्त काव्य में दार्शनिक एवं नैतिक अपेक्षाएं मानव संवेदना की स्वतंत्रता, स्वाभाविकता और आत्मिक पवित्रता के साथ मेल खाते हैं। यह प्रवृत्ति व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रतीक है, जिसमें व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि और नैतिकता का समामेलन सुनिश्चित है। इस प्रकार, रीतिमुक्त के तत्वों का अध्ययन घनानंद के साहित्य में आत्मनिरीक्षण, प्राकृतिकता और नैतिकता का समन्वय प्रस्तुत करता है, जिससे यह साहित्यिक आंदोलन न केवल कविता के स्तर पर बल्कि जीवन के विचारार्थ भी एक स्वतंत्र और जागरूक मार्गदर्शन देता है।

7. आलोचनात्मक विवेचन: घनानंद की रीतिमुक्त के आलोचकीय दृष्टिकोण

घनानंद की रीतिमुक्त के आलोचकीय विवेचन में उनके काव्यात्मक प्रयासों का विश्लेषण अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके गीतों में रीतियों का त्याग और मुक्त भाव का उद्घोष स्पष्ट रूप से अनुकरणीय है, जो पारंपरिक काव्यशैलियों से भिन्न एक नई परंपरा का आधार बनता है। आलोचकों ने उनके रीतिमुक्त वाक्यों को न केवल एक साहित्यिक प्रयोग माना, बल्कि दार्शनिक और नैतिक जागरूकता का प्रतिबिंब भी कहा। उन्होंने रीतिमुक्त को एक स्वतंत्र और स्वाधीन काव्यधारा के रूप में देखा, जिसमें प्रेम, वासनात्मकता और सामाजिक मर्यादा से मोक्ष का संकल्प व्यक्त होता है। इस संदर्भ में, घनानंद का काव्य अपने युगीन परंपराओं से भिन्न होकर एक स्वायत्त रीतिबोधन की दिशा में अग्रसर दिखता है, जहां भाषा, छंद और संरचना के बंधनों से मुक्ति एक आवश्यक तत्व बन जाती है। आलोचक इसी पर बल देते हैं कि घनानंद के रीतिमुक्त पदों में उनके दार्शनिक विचार और नैतिक जागरूकता समाहित हैं, जो जीवन के उच्चतम आदर्शों की ओर प्रेरित करते हैं। इसके अतिरिक्त, आलोचनाओं में उनके कवि स्वरूप और काव्यशैली का विश्लेषण इस दृष्टिकोण से होता है कि उन्होंने पारंपरिक काव्यधाराओं की सीमाओं को तोड़ा और स्वतंत्रता का समर्थन किया। इस मूल्यांकन में यह भी देखा जाता है कि उनकी रीतिमुक्त दर्शक और पाठक को आधुनिक मानव का स्वरूप समझने में सहायता करती है, जहां फॉर्म और संदर्भ के बीच सामंजस्य एक नई काव्यात्मा का संचार करता है। इस तरह, घनानंद की रीतिमुक्त न सिर्फ काव्यशैली का परिवर्तन है, बल्कि जीवन और साहित्य के बीच एक संवादात्मक अनुभव भी प्रस्तुत करती है, जिसका आलोचनात्मक विश्लेषण उनके समकालीन एवं उत्तरकालीन आलोचकों की विशेषज्ञ दृष्टि का आधार बनता है।

8. तुलनात्मक विश्लेषण: अन्य रीतिमुक्त कवियों के साथ

घनानंद की रीतिमुक्त काव्यधारा अन्य रीतिमुक्त कवियों से तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने से उनकी विशिष्टता और पारस्परिक विभिन्नताएँ उभरकर सामने आती हैं। विशिष्ट रूप से, घनानंद ने अपने पदों में आत्मा की रीतिज्ञता को व्यक्तिगत अनुभव और अंतःप्रेरणा के माध्यम से अभिव्यक्त किया है, जबकि अन्य कवि जैसे तुलसीदास या कबीर ने सामाजिक और धार्मिक समस्याओं को प्रधानता दी है। इन कवियों की रीतिमुक्त की अभिव्यक्ति में पारंपरिक धार्मिक स्वर और सामाजिक संदेश स्पष्ट झलकते हैं, जो घनानंद की स्वच्छंदता एवं व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से भिन्न हैं।

इसके अतिरिक्त, घनानंद का रीतिमुक्त काव्य प्राकृतिक सौंदर्य, आत्मान्वेषण और योगिक साधना पर केंद्रित है, जबकि उनके समकालीन कवियों ने भक्ति के विभिन्न रंगों का प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ, तुलसीदास ने भक्ति गीतों में भक्तिपरक सौंदर्य को प्रधानता दी है, वहीं कबीर का आलोचक नीतिशास्त्र और सामाजिक समता की बातें अधिक आकर्षित करती हैं। इसी प्रकार, बिहारी के पदों में मनोवेग और रासायनिक भावनाओं का मिश्रण देखा जाता है। घनानंद की रीतिमुक्त में समकालीन साहित्यिक परंपराओं और दार्शनिक विचारधाराओं के मेल को भी चिन्हित किया जा सकता है। उसकी रचनाओं में तत्वबोध, आत्मबोध और योग का प्रत्यक्ष प्रदर्शन है, जो उसकी व्यक्तिगत अनुभूति एवं विचारधारा से प्रेरित है। इसके विपरीत, पारंपरिक रीतियों में रीतिबद्धता और धार्मिक अनुष्ठान की महत्ता अधिक थी। इस तुलनात्मक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि घनानंद की रीतिमुक्त काव्य अपने अकथनीय आत्मीयता, स्वतंत्रता और प्राकृतिक बिंबों से प्रेरित होकर पारंपरिक धार्मिक काव्यों से भिन्न एक नवीन दिशा का संकेत देता है। यह उनकी रचनात्मक स्वायत्तता का परिणाम है, जो व्यक्तिगत अनुभव एवं आत्मिक जागरूकता के माध्यम से उभरी है। इस तरह, घनानंद का रीतिमुक्त

काव्य अन्य कवियों के साथ तुलना कर उसे उसकी ऐतिहासिक और साहित्यिक विशिष्टताओं के संदर्भ में समझना उसकी समांतर प्रवृत्तियों, मंतव्यों और अभिव्यक्तियों की व्यापकता को उद्घाटित करता है।

9. आधुनिक पाठ के लिए दृश्यीय और भाषिक गुण

आधुनिक पाठ के लिए रीतिमुक्त काव्य में चित्रात्मकता, भाषाई सहजता और दृश्यात्मक प्रभाव महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। घनानंद की रीतिमुक्त काव्यावली में भाषा का सरल और प्रवाहपूर्ण होना उसकी विशेषता है, जो पाठक के मन में स्पष्ट छवियों का निर्माण करता है। उनकी शब्दावली में सूक्ष्मता और गति का समावेश मिलता है, जिसके कारण उनके पदों में सौंदर्य और स्वाभाविकता का संयोग बनता है। ये पद अत्यंत मुक्त और प्रांजल हैं, जिनमें चौकसी से बिना किसी बंधन के स्वर और शैली का प्रयोग हुआ है। प्रस्तुति में प्राकृतिकता और सहज अनुभव के माध्यम से भावाभिव्यक्ति का स्वरूप अधिक प्रभावी बन जाता है। लिखावट में दृश्य शक्ति का प्रभावशाली प्रदर्शन तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक परिवेश का प्रतिबिंब है, जो आधुनिक पाठ में अपनी विशिष्टता बनाए रखता है। भाषा की सामान्य तथा प्रवाहमय शैली, सहज प्रयोग और प्राकृतिक चित्रण पद की दृश्यात्मकता को बढ़ाते हैं। घनानंद की रीतिमुक्त कविताओं में भाषिक प्रांजलता और दृश्यता उनकी मुख्य विशेषता है, जिससे पाठक सीधे हृदय से जुड़ता है। इसी कारण, उनके पदों का वर्तमान पाठ्यक्रम में अध्ययन अधिक संवेदनशीलता और कल्पनाओं का विस्तार करता है। सामाजिक और नैतिक संदर्भ में दृष्टिगत तत्व भी इन पदों की भाषिक और दृश्यीय विशेषताओं को पुष्ट करते हैं। आधुनिक कविता के स्तर पर, इन कविताओं की सरलता और प्राकृतिकता नवीन दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हैं। इस प्रकार, घनानंद के रीतिमुक्त पद न केवल कल्पना और अनुभव को सजीव बनाते हैं, बल्कि भाषिक और दृश्यीय गुणों के समन्वय से पाठक के मनोभावों को झकझोर कर रख देते हैं। अतः, इन गुणों का विश्लेषण इस प्रवृत्ति की प्रासंगिकता एवं प्रभावशीलता को समझने के लिए अनिवार्य है।

10. निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में, यह अध्याय घनानंद की रीतिमुक्त कवित्व की विशिष्टताओं को परिलक्षित करता है। उनके काव्य में शास्त्रीय औपचारिकता का परंपरागत बंधन टूटकर आधुनिक अवबोध की अभिव्यक्ति हुई है। इस संदर्भ में, उनके पदों में छुपे हुए गहरे दार्शनिक और नैतिक तत्व, रीतिमुक्त की अवधारणा के साथ सारगर्भित रूप से जुड़े हैं। घनानंद की रीतिमुक्त महज एक कलात्मक प्रयोग नहीं है, बल्कि यह उस समय की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से उत्पन्न एक आवश्यक प्रतिक्रिया है, जिसमें काव्य की परंपरागत मापदंडों से बंधन मुक्त होकर नवीन अभिव्यक्ति की खोज हुई। वे संप्रेषण के नए माध्यम और भाषिक प्रयोगों को अपनाकर कविता की कलात्मकता को नयापन प्रदान करते हैं, जिससे पाठक और आलोचक दोनों ही उनके काव्य में विविधता एवं मौलिकता का अनुभव करते हैं। इसके साथ ही, उनकी रीतिमुक्त का विश्लेषण अन्य कवियों की तुलना में अधिक सशक्त और सफल माना गया है, क्योंकि वे मौलिक विचारधारा और व्यक्तित्व को कविता में स्थान देते हैं। मात्राविन्यास में छलके मौलिकता, विषयवस्तु की व्यापकता, और लाक्षणिक प्रयोग उनकी रीतिमुक्त काव्यशैली की विशेषता हैं, जो उन्हें परंपरा से स्वतंत्र एवं नवीनतम परंपराओं से जोड़ते हैं। अंततः, घनानंद का रीतिमुक्त पदावली आधुनिक साहित्य के लिए प्रेरणादायक है, क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि काव्य में स्वतंत्रता और रचनात्मकता केवल परंपरा का विरोध या परिवर्तन नहीं, बल्कि नए संप्रेषण और अभिव्यक्ति का एक अन्वेषण है। यह निष्कर्ष न केवल उनके साहित्यिक योगदान का सम्मान करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि रीतिमुक्त कवित्व समकालीन और भावी पीढ़ियों के लिए अविरल प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

11. सन्दर्भ

- **चतुर्वेदी, आर. एस.** (2010). *हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास*. लोकभारती प्रकाशन। (रीतिमुक्त कवियों की संवेदनात्मक गहराई के लिए)।

- **तिवारी, आर. सी.** (2015). *रीतिमुक्त काव्यधारा: एक विश्लेषण*. वाणी प्रकाशन।
- **द्विवेदी, एच. पी.** (2009). *हिंदी साहित्य की भूमिका*. राजकमल प्रकाशन। (साहित्यिक पृष्ठभूमि और परंपरा के लिए)।
- **द्विवेदी, एच. पी.** (2012). *हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास*. राजकमल प्रकाशन।
- **नगेन्द्र.** (संपा.). (2016). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. मयूर पेपरबैक्स। (रीतिकाल के वर्गीकरण और घनानंद के स्थान के लिए)।
- **नगेन्द्र.** (1955). *रीति काव्य की भूमिका*. नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- **नामवर सिंह.** (2011). *कविता के नये प्रतिमान*. राजकमल प्रकाशन।
- **पाण्डेय, एम.** (2005). *रीतिमुक्त काव्य और घनानंद*. किताब घर प्रकाशन।
- **मिश्र, वी. पी.** (संपा.). (1952). *घनानंद ग्रंथावली*. प्रसाद प्रकाशन। (मूल पाठ और प्रामाणिक व्याख्या के लिए)।
- **लाल, एम.** (1988). *घनानंद और रीतिमुक्त काव्य*. नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- **वर्मा, आर. के.** (2008). *हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास*. रामनारायण लाल बेनी माधव।
- **वर्मा, डी.** (2013). *हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास*. सरस्वती प्रेस।
- **शर्मा, आर. बी.** (2014). *साहित्य, संस्कृति और हिंदी आलोचना*. राजकमल प्रकाशन।
- **शुक्ल, आर. सी.** (2018). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. लोकभारती प्रकाशन। (घनानंद के 'साक्षात् रसमूर्ति' होने के वर्णन के लिए अनिवार्य)।
- **सिंह, बी.** (2012). *हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास*. राधाकृष्ण प्रकाशन। (रीतिमुक्त काव्य के आधुनिक संदर्भों के लिए)।
- **सिंह, बी.** (2014). *रीतिकाल की भूमिका*. वाणी प्रकाशन।
- **सिंह, के. पी.** (2006). *रीतिमुक्त कवि और उनका काव्य*. विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- **सहाय, एस.** (1995). *घनानंद: व्यक्ति और कवि*. साहित्य अकादमी।
- **स्नेही, आर.** (2010). *घनानंद की कविता में प्रेम और विरह*. अभिनव प्रकाशन।

Cite this Article:

डॉ गंगेश दीक्षित,“ रीतिमुक्त काव्य घनानंद के संदर्भ में” *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.148-153, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ गंगेश दीक्षित

For publication of research paper title

रीतिमुक्त काव्य घनानंद के संदर्भ में

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.16